हिन्दी सिनेमा और गांधी

डॉ. वत्सला
सह-आचार्य (संस्कृत)
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, झालावाड़

सिनेमा समाज में प्रयुक्त बहुप्रचलित शब्द है। सिनेमा का अर्थ होता है - चलचित्र, सिनेकला, सिनेमाघर, सिनेमाहाल, फिल्म। अंग्रेजी में इसे मूवी और पिक्चर कहते हैं। कुछ लोग सिनेमा को कल्पनालोक कहते हैं किन्तु यह पूर्णतः सत्य नहीं है। जैसे लोक का अनुकीर्तन काव्य, नाटकादि सभी विद्याओं में होता है, वैसे ही लोक का अनुकरण (लोक का प्रतिबिम्ब) फिल्मों में भी देखने को मिलता है। फिल्मों में भी लोक में परिव्याप्त समस्याओं, विसंगतियों, विषमताओं का फिल्मांकन बेहतरीन तरीके से किया जाता है। समाज में प्रसृत प्रवृत्तियाँ का प्रभाव साहित्य की तरह फिल्मों में भी परिलक्षित होता है।

साहित्य की तरह सिनेमा से भी रसानुभूति (आनन्द) की प्राप्ति होती है। इसका अनुमान सिनेमाघरों से निकलने वाली फिल्मों की भीड़ को देख कर लगाया जा सकता है। सिनेमा नाटक की तरह दृश्य होता है। कालिदास ने भिन्न रुचि वाले लोगों के लिए नाटक को एक सामान्य मनोरंजन का साधन बताया हैः- 'नाटयं भिन्नरुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम्' इसी प्रकार सिनेमा भी भिन्न रुचि वाले लोगों के लिए मनोरंजन का साधन है। फिल्मों से नाटक की भाँति दर्शकों को रसानुभूति (आनन्दानुभूति) की प्राप्ति होती है। लोक की अभिरुचि के अनुसार ही निर्माता, निर्देशक कहानी का चयन कर फिल्म का निर्माण करते हैं। इस तरह सिनेमा, साहित्य और समाज का आपस में अन्तःसम्बन्ध है।

20वीं शताब्दी के आरम्भ में जब मनोरंजन के अन्य साधन नहीं थे, तो फिल्में ही मनोरंजन का सर्वसुलभ माध्यम थीं। सिनेमाघरों में लगने वाली पिक्चरों का प्रसार रेडियो, समाचारपत्रों, रिक्शा के पीछे पोस्टर लगा करके तथा माइक से प्रचारित करके, ट्राली पर पोस्टर चिपका कर अथवा व्यक्ति के द्वारा गली - मोहल्ले व सड़कों पर घूम-घूम कर आगामी पिक्चरों तथा सिनेमाघरों में लगने वाली पिक्चर का प्रचार-प्रसार किया जाता था। पिक्चर हाल में लगने वाली नयी पिक्चर के आरम्भ में आगामी पिक्चरों के ट्रेलर दिखाये जाते थे जिससे नयी पिक्करों की कहानी तथा पात्रों

(हीरो-हीरोइन) के विषय में जानकारी मिलती थी। यदि पिक्चर देखने जाना है और पिक्चर हाल में क्या पिक्चर लगी है। अभी वही पिक्चर लगी है या बदल गयी। इसे जानने का स्रोत समाचार पत्र थे।

एक जमाने में बहुत से परिवारों में फिल्मों को देखना अच्छा नहीं माना जाता था और न पिक्चर देखने की अनुमति दी जाती थी। लोग चोरी से पिक्चर देखने जाते थे, जिससे घरवालों को ज्ञात न हो सके कि उनके घर के सदस्य पिक्चर देखने गये हैं। लेकिन कुछ परिवारों में लोगों को पिक्चर देखने की अनुमति थी। वे लोग पिक्चर देखने जाते थे और फिल्म को देखने के उपरान्त वे लोगों को फिल्म की कहानी सुनाते थे।

फिल्मों को देखने का जैसा इतिहास है वैसे ही फिल्मों के निर्माण का इतिहास भी दीर्घकालिक है। भारतीय सिनेमा का इतिहास बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से शुरू हुआ है। पहले फिल्मों की कहानियाँ केवल धार्मिक, पौराणिक व ऐतिहासिक होती थी। पहली मूक फिल्म 1913 में राजा हरिशचन्द्र बनी थी। इसे पश्चात् बीसवी शताब्दी (1920) में फिल्म निर्माण करने वाली कई कम्पनियाँ आयीं और 1931 में पहली बार ध्वनिसहित फिल्म, जिसे बोलती फिल्म कहा गया,

बनी 'आलमआरा'। इसके पश्चात् फिल्म जगत् में क्रान्तिकारी परिवर्तन का दौर आया। फिल्म क्षेत्र का विस्तार हुआ। विभिन्न भाषाओं यथा बंगला, मराठी, तमिल, तेलगु आदि में फिल्में बनने लगीं। बींसवी शताब्दी के मध्य से फिल्मों की पटकथा में भी परिवर्तन हुआ। देशभक्ति और सामाजिक समस्याओं व सन्देशों को देने वाली फिल्में बनने लगीं। यथा- वेश्यावृत्ति, दहेजप्रथा, विधवा विवाह, बेमेल विवाह, निःसन्तान, सन्तान प्राप्ति, बहुविवाह, ऊँच-नीच, छुआ-छुत, सम्पत्ति अधिग्रहण, गरीबी, समाज में व्याप्त अमीरी-गरीबी की खाई, परिवार नियोजन, अशिक्षा, विवाहेतर सम्बन्ध, घर से पलायन, पूर्व प्रेम सम्बन्ध आदि पर आघृत कहानियों पर फिल्में बनने लगीं और लोगों द्वारा सराही गयीं। 1950 से 1960 तक का काल भारतीय सिनेमा के इतिहास में स्वर्णकाल माना जाता है। इस समय में बनी फिल्में समाज के लिए बड़ी प्रेरणादायी रहीं।

20 वीं शताब्दी में जब पूरे देश में स्वतन्त्रता आन्दोलन की लहर फैली थी, तो इस आन्दोलन का प्रभाव भी फिल्मों पर पड़ा। परिणामस्वरूप देशभक्ति पर केन्द्रित फिल्में बनीं, जो जन समुदाय की स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए प्रेरित करने वाली थीं। ऐसी फिल्में लोगों द्वारा बहुत पसन्द की गयी। कुछ सुप्रसिद्ध फिल्मों के नाम इस प्रकार हैं - 1952 में आनन्दमठ बनी जो बंकिमचन्द्र चटर्जी के उपन्यास पर आधारित थी। 1943 किस्मत - यह फिल्म द्वितीय

विश्व युद्ध की कथा पर आधृत थी। 1948 - शहीद, 1953 - झाँसी का रानी, 1965 - शहीद, 1964 - हकीकत - यह फिल्म 1962 में हुए भारत चीन युद्ध पर बनी थी। 1957 - मदर इंडिया आदि।

भारत की स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात् भी नामचीन स्वतन्त्रता सेनानियों, महापुरूषों के चरित्रों तथा स्वतन्त्रता के संघर्ष की घटनाओं पर फिल्मों का निर्माण हुआ । जो लोगों द्वारा बहुत पसन्द की गयी। कतिपय नामावलियाँ अवलोकनीय हैः- उपकार, पूरब और पश्चिम, गरम हवा, आक्रमण, सत्यमेव जयते, द लेंजेड आफ भगतसिंह 2002, मंगलपांडे 2005, द राइजिंग, रंग दे बसन्ती 2006, गांधी - 1982, नेताजी सुभाषचन्द्र बोस - द फारगाटन हीरो 2004, सरदार - 1993, बार्डर - 1997, मा तुझे सलाम 2002, सरफरोश, लगान, गदर-एक प्रेम कथा, 1971 (2007), लक्ष्य - 2004, उरी द सर्जिकल स्ट्राइक 2019 आदि अनेकानेक फिल्में बनी और बन रही है।

इस प्रकार हम देखते है कि फिल्मों का समाज व देश की गतिविधियों से बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। फिल्मकारों ने समाज में व्याप्त प्रवृत्तियों का बड़ी परिपक्वता से फिल्मों में चित्रांकन व प्रस्तुतीकरण किया है। यही कारण है कि गांधी जी को ले कर स्वतन्त्रता संग्राम के महानायक थे। सुभाषचन्द्र बोस ने उन्हें 'बापू' तथा रवीन्द्रनाथ टैगोर ने उन्हे 'महात्मा' की उपाधि दी थी। पूरा देश उन्हें राष्ट्रपिता कहता था। गांधी जी स्वतन्त्रता आन्दोलन के समय अपनाए गए सत्य, अहिंसा व शान्ति के सिद्धान्तो से भारतीय इतिहास में अजर-अमर है। यद्यपि सत्य, अहिंसा व शान्ति के सिद्धान्त हमारे धर्मग्रन्थों में सदियों से वर्तमान थे, किन्तु गांधी जी ने इन्हें अपने जीवन में केवल सैद्धान्तिक रूप से नहीं अपितु प्रायोगिक रूप से ग्रहण किया। इसीलिए विश्व के इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में अकिंत हो गया।

संयुक्त राष्ट्र संघ ने दो अक्टूबर को 2007 में 'अहिंसा दिवस' मनाया जाता है। गांधी जी ने सत्य, अंहिसा व शान्ति के जो प्रयोग किए, उसे अपनी आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' में लिखा। उनकी आत्मकथा ने फिल्मजगत् को प्रभावित किया और फिल्मों का निर्माण हुआ। स्वतन्त्रता आन्दोलन के आरम्भ में गांधी जी का योगदान अविस्मरणीय था किन्तु बाद में नाना कुचक्रों के कारण वे अपने आदर्श से भटक गये (विचलित) हो गये, ऐसा कहा जा सकता है। यद्यपि गांधी जी के जीवन एवं कृत्यों को लेकर कई फिल्में बनीं, किन्तु गांधी जी ने अपने जीवन में दो ही फिल्में देखी थीः- 1 .रामराज्य, 2-मिशन टु मास्को। गांधी जी पर फिल्म बनने का सिलसिला जो स्वतन्त्रता आंदोलन के समय से आरम्भ हुआ वह अब तक प्रवाहमान है। 'गांधी चरित्र' पर बनी फिल्मों का विवरण इस प्रकार हैः-

1. जागृति (1954) -

इसके निर्माता शशधर मुखर्जी और निर्देशक सत्येन बोस थे। इसके गीतों को कवि प्रदीप ने लिखा था । इस फिल्म का सुप्रसिद्ध गाना है- दे दी हमें आजादी बिना खड्ग बिना ढाल। यह ब्लैक एण्ड व्हाइट फिल्म थी। इसके अन्य गाने हैं- आओ बच्चों तुम्हे दिखाएँ झाँकी हिन्दुस्तान की, हम लाये हैं तूफान से किश्ती निकाल के।

2. बापू ने कहा था (1962) -

यह फिल्म बाल चित्र समिति की भेंट थी। इसके निर्माता महेन्द्रनाथ थे और निर्देशन विजय भट्ट का था। गीतकार भरत व्यास थे। फिल्म ब्लैक एण्ड व्हाइट थी। अभिनेता नाना पलसीकर थे। इस फिल्म में एक छोटा बालक किस प्रकार बापू के आदर्शो से प्रभावित होता है और वह बापू के आदर्श को अपने गाँव में लोगों को सिखाता है।

3. महात्मा - लाइफ आफ गांधी - 1869 - 1948 -

इस फिल्म में 1869 से 1948 तक गांधी जी की लाइफ और भारत की आजादी के लिए उनके संघर्ष को दिखाया गया है। इस फिल्म को अंग्रेजी भाषा में बनाया गया था। इस फिल्म का निर्देशन विशुभाई झवेरी ने किया था। वह फिल्म ब्लैक एण्ड व्हाइट थी। इसे लोगो ने खूब पसन्द किया था। फिर इस फिल्म को हिन्दी में भी तैयार किया गया । यह फिल्म गांधी नेशनल मेमोरियल फंड तथा भारत सरकार के फिल्म डिवीजन द्वारा बनायी गयी थी।

4. गांधी (1982) -

इस फिल्म में गांधी की भूमिका को वेस्टर्न ऐक्टर बेन किंग्सले ने निभाया था। इसमें अमरीशपुरी, ओमपुरी, रोहिणी, हृदंगणी और रजत कपूर जैसे कलाकार थे। इस फिल्म को आठ ऑस्कर अर्वाड्स मिले थे ऑस्कर के साथ ही वापय, गैमी, गोल्डन ग्लोव और गोल्डन गिल्ड समेत 26 अवार्ड प्राप्त हुए थे। यह फिल्म पूरे भारत में टैक्स फ्री थी। इस फिल्म को बहुत लोकप्रियता मिली थी।

5. सरदार (1993)

यह फिल्म केतन मेहता द्वारा निर्देशित थी। फिल्म में अन्नू कपूर ने महात्मा गांधी का किरदार निभाया था। गांधी और सरदार पटेल के विचारों में पार्थक्य को दर्शा कर उनके राष्ट्रिय लक्ष्यों को प्रस्तुत किया है। यह फिल्म उन महापुरुषो के रिश्तों को समझने का अवसर देती है। सरदार पटेल का चरित्र परेश रावल ने निभाया था।

6. मेकिंग आफ महात्मा -

1996 इस फिल्म का निर्देशन श्याम बेनेगल ने किया था। इसमें गांधी की भूमिका रजत कपूर ने निभायी थी। इसमें मोहनदास करमचंद गांधी के महात्मा बनने की कहानी को विस्तार से दिखाया गया है। ब्रिटेन ओर अफ्रीका में रहने के दौरान गांधी जी ने क्या देखा और उससे उनके जीवन में क्या कुछ बदलाव हुआ इस पूरी यात्रा को काफी प्रभावी ढंग से इस फिल्म में दिखाया गया है।

7. हे राम – 2000

इस फिल्म को दक्षिण भारतीय कलाकार कमल हसन ने बनाया है। इसकी कहानी भी उन्होंने लिखी, उन्हीं के निर्देशन में यह फिल्म बनी। इस फिल्म में नसीरुद्दीन शाह ने गांधी का किरदार निभाया है। इसमें विभाजन के बाद फैली अशान्ति और गांधी जी की हत्या के बीच की कहानी दिखायी गयी है। फिल्म में शाहरुख खान, रानी मुखर्जी, गिरीश कर्नाड, ओमपुरी जैसे कलाकारों ने भी अपनी भूमिका निभायी है।

8. मैंने गांधी को नहीं मारा – 2005

यह फिल्म जान्हू बरुआ के निर्देशन में बनी है। इस फिल्म के कलाकार अनुपम खेर, उर्मिला मातोंडर, रजत कपूर, वमन ईरानी, वहीदा रहमान, प्रेम चोपड़ा थे। फिल्म में अनुपम खेर ने उत्तम चौधरी की भूमिका निभायी, जो यह स्वीकार करता है कि उसने ही गांधी की हत्या की है। उसके बाद उनकी बेटी उर्मिला मार्तोंडर यह पता लगाने की कोशिश करती है, कि क्या सच में उसके पिता ने गांधी की हत्या की है या कुछ और बात है।

9. लगे रहो मुन्नाभाई – 2006

यह फिल्म राजकुमार हिरानी के निर्देशन में बनी है। इस फिल्म में मुख्य भूमिका संजय दत्त की रही। इसके अलावा इसमें अरशद वारसी व वमन ईरानी ने काम किया था। यह फिल्म न केवल गांधी जी के ऊपर बनी थीं, बल्कि इसमें उनकी शिक्षाओं पर भी प्रकाश डाला गया था। इसमें दिखाया गया है कि आज के जमाने में भी गांधी प्रासंगिक क्यों है, गांधी जी की विचारधारा को काफी अलग तरीके से प्रस्तुत किया गया था। इस पिक्चर में बड़े ही मनोरंजक दंग से गांधी जी के किरदार को बड़े पर्दे पर उतारा है। फिल्म में संजय दत्त उर्फ मुन्ना भाई गांधी जी की विचारधारा पर चलते हैं। इस फिल्म में आज के युग में गांधीगिरी को भी प्रचलित किया है। यह फिल्म हास्य व्यङ्ग्य से परिपूर्ण थी। इस फिल्म को लोगों ने खूब पसन्द किया था। यूनाइटेड स्टेट नेशन में दिखायी जाने वाली यह पहली हिन्दी फिल्म थी।

10. गांधी माई फादर – 2007

यह फिल्म फिरोज अब्बास मस्तान के निर्देशन में बनी थी। यह फिल्म महात्मा गांधी और उनके बेटे हरिलाल के रिश्तों पर बनी थी। गांधी का किरदार दर्शन जरीवाला ने निभाया था। बेटे की भूमिका (चरित्र) को अक्षय कुमार ने निभाया है। फिल्म में यह दिखाया गया है कि हरिलाल को लगता है कि देश के पिता होने के बावजूद महात्मा गांधी उनके लिए एक अच्छे पिता होने में असफल रहे। इस फिल्म को नेशनल अवार्ड मिला था।

11. गांधी द कान्सपिरेंसी

अल्जीरियन निर्देशन करीम ट्राडिया निर्देशित इस फिल्म में हालिवुड कलाकारों के साथ ही ओमपुरी, रजत कपूर बालीवुड के किरदारों ने अहम् किरदार निभाए है। यह फिल्म भारत विभाजन के बाद से गांधी जी की हत्या तक के घटनाक्रम पर आधारित है। इस फिल्म में गांधी का किरदार एक्टर, प्रोडयूसर और राइटर Jesus Sans ने निभाया था। सन् 2018 में यह फिल्म प्रसारित की गयी थी।

उपर्युक्त फिल्मों में स्वतन्त्रता-काल के गांधीवाद से ले कर आधुनिक काल की गांधीगिरी दर्शकों को बहुत पसन्द आयी। इस प्रकार हम देखते हैं, कि चलचित्र (सिनेमा) जो कि हमारे समाज का अभिन्न अंग रहे हैं। इन फिल्मों में चित्रित देश व समाज की राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक स्थितियों को देखकर तत्कालीन समाज व देश की स्थिति का आकलन कर सकते हैं। पहले समाज में फिल्मों को देखना अच्छा नहीं समझा जाता था, अब यह अवधारणा बदल गयी है। फिल्मों मे देश की ज्वलन्त समस्या को दिखाया जाता है और उसका समाधान भी प्रस्तुत किया जाता है। यदि जिन्होने गांधी को नहीं पढ़ा है, समाज के ऐसे लोग गांधी पर बनी हुई फिल्में देखें, तो उन्हे गांधी दर्शन को समझने में बहुत अधिक सहायता मिल सकती है। फिल्मों का अनुकरण समाज में सर्वाधिक किया जाता है। अनुकरण के द्वारा समाज व राष्ट्र की दशा व दिशा बदली जा सकती है। जैसे साहित्य समाज का दर्पण होता है वैसे ही सिनेमा भी समाज का आईना है।